पाठ: प्रकाशितवाक्य 16:12–16

“फिर छठवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा बड़े यूफ्रात नदी पर उड़ेल दिया और उसका जल सूख गया ताकि पूर्व के राजाओं के लिये मार्ग तैयार किया जा सके।
और मैंने तीन अशुद्ध आत्माओं को, जो मेंढ़कों के समान थीं, अजगर के मुख से, पशु के मुख से और झूठे भविष्यवक्ता के मुख से निकलते देखा।
वे दुष्टात्माएँ हैं जो चमत्कार करती हैं और वे सारी पृथ्वी के राजाओं के पास जाती हैं ताकि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिये इकट्ठा करें। “देखो, मैं चोर के समान आता हूँ। धन्य है वह जो जागता रहता है और अपने वस्त्र सँभाले रहता है, ताकि वह नग्न होकर न फिरे और लोग उसका लज्जा न देखें।”
और उन्होंने उन्हें इब्रानी भाषा में जिसे हार्मगिदोन कहा जाता है, उस स्थान पर इकट्ठा कर दिया।”
(प्रकाशितवाक्य 16:12–16, ERV-HI)

1. बाइबल में नदियों का आत्मिक महत्व

शास्त्रों में नदियाँ केवल जलधारा नहीं, बल्कि गहरे आत्मिक अर्थ का प्रतीक होती हैं। वे दर्शाती हैं:

एक समय से दूसरे समय में प्रवेश की सीमा,
ऐसी बाधाएँ जिन्हें केवल परमेश्वर की मदद से पार किया जा सकता है,
या फिर परमेश्वर की आशीष का स्रोत (भजन संहिता 1:3)।

यरदन नदी इसका स्पष्ट उदाहरण है। इस्राएलियों के लिए प्रतिज्ञात देश में प्रवेश करने से पहले यह एक बड़ी बाधा थी (यहोशू 3:14–17)। इसे पार करना मनुष्य की शक्ति से असंभव था—केवल परमेश्वर के अद्भुत हस्तक्षेप से ही मार्ग खुला। यही सिद्धांत हमें सिखाता है कि जब परमेश्वर की प्रजा असंभव परिस्थितियों से गुजरती है, तब परमेश्वर वहाँ मार्ग बनाता है जहाँ कोई मार्ग नहीं होता (यशायाह 43:19)।

प्रकाशितवाक्य 16 में यूफ्रात नदी भी एक आत्मिक सीमा के रूप में प्रस्तुत है। जब उसका जल सूख जाता है, तो यह दर्शाता है कि परमेश्वर अपनी रोक हटा देता है और दुष्ट शक्तियों को युद्ध की तैयारी के लिए मार्ग मिल जाता है।

2. अदन की चार नदियाँ

उत्पत्ति 2:10–14 बताती है कि अदन से एक नदी बहकर निकली और चार भागों में बँट गई: पीशोन, गीहोन, हिद्देकेल (टिग्रिस) और यूफ्रात। ये नदियाँ परमेश्वर की उपस्थिति, प्रचुरता और आत्मिक व्यवस्था का प्रतीक थीं।

परन्तु जब आदम और हव्वा गिरे, तब यह दिव्य प्रवाह मानो “सूखने” लगा और पाप के कारण आत्मिक मृत्यु संसार में प्रवेश कर गई (रोमियों 5:12)।

अंतिम समय में प्रकाशितवाक्य 16 में वही यूफ्रात पुनः दिखाई देती है। उसका सूख जाना यह दर्शाता है कि परमेश्वर का आत्मिक आच्छादन हट चुका है और अब न्याय का समय आ पहुँचा है।

यह हमें यह सिखाता है कि जब मनुष्य परमेश्वर को अस्वीकार करता है, तो आशीष की जगह न्याय और व्यवस्था की जगह अराजकता आ जाती है (रोमियों 1:18–32)।

3. पूर्वी शक्तियों का उदय – भविष्यवाणी की पूर्ति

प्रकाशितवाक्य 16:12 कहता है कि “पूर्व के राजाओं के लिये मार्ग तैयार किया जाएगा।” सदियों तक पूर्वी देशों के पास कोई बड़ी वैश्विक सैन्य शक्ति नहीं थी। लेकिन आज चीन, उत्तर कोरिया और ईरान जैसी राष्ट्र बड़ी सैन्य शक्तियों के रूप में खड़े हैं। यह बदलाव बाइबल की भविष्यवाणी से मेल खाता है।

यीशु ने चेतावनी दी थी: “तुम युद्धों और युद्ध की अफवाहों की बातें सुनोगे… यह सब बातें अवश्य होंगी” (मत्ती 24:6–7)। आज

पूर्व और पश्चिम के बीच बढ़ता तनाव और युद्ध की तैयारी इस भविष्यवाणी की ओर इशारा करती है, जो अंत में हार्मगिदोन की लड़ाई पर समाप्त होगी।

4. हार्मगिदोन की लड़ाई – अंतिम टकराव

पूर्व से आने वाले राजा, दुष्टात्माओं की शक्ति से प्रेरित होकर (प्रकाशितवाक्य 16:14), राष्ट्रों के गठबंधन को इकट्ठा करेंगे जो परमेश्वर की प्रजा—विशेषकर इस्राएल—के विरुद्ध युद्ध करेंगे (जकर्याह 14:2–3)। इस युद्ध को हार्मगिदोन कहा गया है और इसमें 20 करोड़ सैनिक सम्मिलित होंगे (प्रकाशितवाक्य 9:16)।

यह कोई रूपक नहीं, बल्कि वास्तविक वैश्विक युद्ध होगा, जहाँ अकल्पनीय विनाश होगा। आज एक हाइड्रोजन बम करोड़ों लोगों को नष्ट कर सकता है। ऐसे हजारों हथियार पहले से मौजूद हैं। यीशु ने कहा: “यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी जीवित न बचता” (मत्ती 24:22)।

यह युद्ध तब समाप्त होगा जब मसीह लौटकर आएगा (प्रकाशितवाक्य 19:11–21) और पशु, झूठे भविष्यवक्ता और उनके सेनाओं को पराजित करेगा।

5. आत्मिक जागरूकता की पुकार

अब प्रश्न है: हम किस समय में जी रहे हैं?

उत्तर यह है कि हम इतिहास के अंतिम क्षणों में हैं। संसार डगमगा रहा है और भविष्यवाणियाँ हमारी आँखों के सामने पूरी हो रही हैं।

यीशु ने चेतावनी दी:
“देखो, मैं चोर के समान आता हूँ। धन्य है वह जो जागता रहता है
और अपने वस्त्र सँभाले रहता है…”
(प्रकाशितवाक्य 16:15)

बहुत लोग भौतिक सफलता में उलझे हैं, परन्तु आने वाले अनन्त खतरे से अनजान हैं। यीशु ने कहा: “यदि कोई मनुष्य सारा संसार प्राप्त कर ले और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?” (मरकुस 8:36)।

6. उद्धार की तात्कालिकता – अभी निर्णय लो

अच्छी खबर यह है कि अभी भी अनुग्रह का समय है। दरवाज़ा खुला है, पर समय बहुत कम है (2 कुरिन्थियों 6:2)।

यदि आप व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह को नहीं जानते, तो यही समय है कि आप पश्चाताप करें और सुसमाचार को स्वीकार करें। उन्होंने आपके उद्धार के लिए प्राण दिए और वे शीघ्र ही लौटेंगे। यदि आपने उन्हें नहीं अपनाया, तो आपको परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ेगा।

“क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं ठहराया,
परन्तु इसलिये कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें।”
(1 थिस्सलुनीकियों 5:9)

निष्कर्ष: आ, प्रभु यीशु!

यूफ्रात नदी सूख रही है—शाब्दिक और आत्मिक दोनों रूप से। पूर्व के राजा उठ खड़े हुए हैं। संसार अंतिम युद्ध की ओर बढ़ रहा है।

क्या आप तैयार हैं?

क्या आपने अपना जीवन मसीह को सौंप दिया है?
क्या आप जागते पाए जाएँगे या अनजाने पकड़े जाएँगे?

आज ही ठान लीजिए कि आप किसकी सेवा करेंगे (यहोशू 24:15)। संसार तो मिट जाएगा, परन्तु जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह सदा बना रहेगा (1 यूहन्ना 2:17)।

आ, प्रभु यीशु!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp